Sem-3, MJ-5

'सच्ची वीरता' निबंध की समीक्षा

'सच्ची वीरता' सरदार पूर्णसिंह का एक महत्त्वपूर्ण भावात्मक निबंध है। द्विवेदीयुगीन निबंधकार पूर्णसिंह के निबंधों में उपदेशात्मकता और महत् मानवीय आदर्शों के साथ ही भावना का आवेग और कल्पना की उड़ान है। यद्यपि पूर्णसिंह ने हिन्दी में केवल छः निबंध लिखे हैं, तथापि वे हिन्दी निबंध-साहित्य पर अमिट छाप छोड़ते हैं। प्रस्तुत निबंध में लेखक ने सच्ची वीरता के लक्षणों को बतलाते हुए कई उदाहरणों द्वारा सिद्ध किया है कि सच्चे वीर जन्मजात होते हैं।

लेखक ने माना है कि सच्चे वीर पुरुष धीर, गम्भीर और स्वतंत्र होते हैं। सच्चे वीरों के विचार सदैव उच्च और पवित्र होते हैं, उनका मनोबल हमेशा ऊँचा होता है, विकट परिस्थिति में भी वे घबराते नहीं। उनके हृदय में नारी के प्रति सम्मान एवं सबके लिए दया और प्रेम का भाव भरा होता है। सच्चे वीर दूसरों के मन को मोहते हैं और वे दूसरों के प्रति समर्पित होते हैं। लेखक के शब्द हैं - "वीर पुरुष का दिल सबका दिल हो जाता है। उसका मन सबका मन हो जाता है।"

निबंध में लेखक के विचार में वीरता की अभिव्यक्ति कई प्रकार से होती है। कुछ वीर युद्ध में वीरता दिखाते हैं तो कुछ गूढ़तत्त्व और सत्य की खोज में महात्मा बुद्ध की तरह विरक्त होकर वीरता दिखाते हैं। जीवन की विभिन्न कठिनाईयों एवं विपरीत स्वभाव वाले लोगों का सामना जीवन में प्रायः होता रहता है। यदि मनुष्य ऐसे क्षणों से प्रभावित हुए बिना, दुख-कष्टों से डरे बिना, सतोगुण युक्त मन से सत्य मार्ग पर दृढ़ होकर तथा हानि-लाभ, जीवन-मरण, मान-अपमान सबमें समान रहकर आचरण करता है, वही वास्तव में वीर है। लेखक ने लिखा है, "वीर पर बाहरी परिवेश का प्रभाव नहीं पड़ता।"

लेखक ने वीरता को एक प्रकार की अन्तः प्रेरणा कहा है, जिसे देखकर लोग अचम्भित हो जाते हैं। इसीलिए वीरता

LP Page No: ______
Date: / /

को किसी कारखाने में नहीं बनाया जा सकता। सच्चे वीर तो देवदारु वृक्ष की भाँति स्वयं जनमते हैं और स्वयं में शक्ति उत्पन्न कर खड़े हो जाते हैं और दूसरों को सहारा देते हैं। इसके प्रतिकूल कायर जीवन को समझने के बावजूद पीछे हटते रहते हैं। कायर गरजनेवाले बादल की तरह कभी बरसते नहीं; जबकि वीर बरसनेवाले बादल होते हैं। वे नीति-बल, आत्मबल एकत्रित कर उसकी वृद्धि करते हैं। लेखक कहते हैं कि सच्चे वीर वे नहीं होते जो टीन के बर्तन की तरह झट से गर्म और ठण्डा हो जाये। इसीलिए वीरता हमेशा धैर्य, गांभीर्य और सत्य से ही युक्त होती है।

पूर्ण सिंह इसी आधार पर बड़े-बड़े राजा-महाराजा को ऐश्वर्यवान और बलवान तो मानते हैं किन्तु चूँकि ये प्रजा के दिलों पर शासन नहीं करते, इसलिए ये वीर नहीं होते। लेखक कहते हैं - "ये राजे-महाराजे जरी, मखमल तथा जेवरों से लदे हुए मांस के पुतले हमेशा डर से हरदम कांपते रहते हैं। इसके विपरीत, सच्चा वीर सूफी संत मंसूर थे जिन्होंने मरते दम तक यह कहना नहीं छोड़ा कि मैं खुदा हूँ; क्योंकि इस सत्य पर वे दृढ़ थे। इसी तरह महाराजा रणजीत सिंह का नदी को सेना सहित घोड़े से पार करना, नेपोलियन का आल्प्स पर्वत का सेना के साथ पार कर लेना, ईसा का हँसते-हँसते सलीब पर चढ़ जाना, मीरा का विष पी जाना आदि सच्चे वीरों के ज्वलंत उदाहरण हैं।

इस प्रकार विद्वान लेखक पूर्ण सिंह ने सच्ची वीरता एवं सच्चे वीरों के कई उदाहरणों को प्रस्तुत कर वीरता को व्याख्यायित किया है। यह व्याख्या वीरता को हमेशा निराली और नयी मानता है और उसकी नकल नहीं की जा सकती है। 'सत्यमेव जयते' की प्रसिद्ध सूक्ति वीरता की ही पहचान है। जहाँ व्यक्ति में पवित्रता, प्रेम, धर्म, सत्य आदि आध्यात्मिक मूल्यों का वास होता है, वहीं वीरता शोभित होती है। सतोगुण युक्त निर्मल तथा शुद्ध मन, जिसमें किसी के अहित, निन्दा, अपमान या ईर्ष्या के लिए कोई स्थान नहीं होता। वास्तव में ऐसे सच्चे वीर मनुष्य के वेश में देवता ही होते हैं।